नैनीताल
शुक्रवार, 07 अक्तूबर 2016

ujala.com अमर उजाला

विराट रूपों में क्यों हैं मां काली

पौराणिक और तांत्रिक संदर्भ न जुड़े होते, तो काली की प्रतिमा को शायद ही कोई निहारता। विवेकानंद ने भी उसी रूप से तरंगे प्राप्त कीं।

श्रीरामकृष्ण अत्यन्त प्रसन्न थे। उनके सर्वप्रिय शिष्य नरेंद्रनाथ (स्वामी विवेकानंद) ने काली को एक देवी के रूप में अपनाया था। श्रीरामकृष्ण फूले न समाए। वे ताली बजाकर गाने लगे और बताने लगे, 'नरेन ने काली को अपना लिया है।' सनातन धर्म में असंख्य देव-देवियों के रहते केवल काली को ही इतना महत्व क्यों? श्रीरामकृष्ण ने भी पूजा और आध्यात्मिक साधन के लिए दक्षिणेश्वर के काली मंदिर को ही क्यों चुना?

इस गुत्थी को सुलझाने के पहले हमें सनातन धर्म की यह विशेषता समझनी होगी कि सनातन धर्म में केवल भगवान का ही स्थान है। हम काली के रूप की ओर ध्यान दें, तो देखते हैं कि काली संपूर्ण नग्न हैं। वह अपनी जीभ को निकाले हुए, मुण्डमाला और मनुष्य-हाथों का गहना पहने अपने पति शिवशंकर की छाती पर खड़ी हैं।

काली के रूप के साथ नारियों के संबंध में प्रचलित सामाजिक धारणाओं की तुलना करें, तो यह साफ होता है कि काली का रूप समाज में नारी की 'स्वीकृत' छवि पर एक तीव्र कटाक्ष है। जीभ बाहर निकालना एक नारी के लिए चपलता या अशिष्ट आचरण माना जाता है, पर काली अपनी जीभ निकाल रही हैं। वस्त्र और आभूषण एक नारी के सौंदर्य माने जाते हैं और काली ने विवस्त्र होकर मनुष्य-अंगों के गहने पहने हुए हैं। जहां सदियों से नारी को हमेशा ही पुरुष के अधीन माना गया है। वहां काली अपने पति के ऊपर खड़ी हैं। काली का रूप इस बात को दर्शाता है कि परम सत्य में कोई शिष्टाचार या सौंदर्य नहीं होता। यदि केवल अखण्ड परम तत्व ही सत्य है, तो यह मानना कि केवल अच्छाई में ही वह तत्व है, तार्किक नहीं होगा। सही आध्यात्मिक पथ वही

होगा, जिसमें भले और बुरे को समान रूप से दिव्य माना जाता हो। काली की आराधना भयानक और विराट के दिव्यत्व की आराधना है, पर हम काली की आराधना कैसे करते हैं? फूलों से सजाकर, धूप-दीप दिखाकर, सौंदर्य की संकीर्ण मान्यताओं में काली मूर्ति को बांधकर। काली की पूजा जंगल, श्मशान, अस्पताल और जहां कहीं भी भयानक, वीभत्स, या दुःखमय कुछ भी हो, वहां होनी चाहिए। काली के चरित्र ने विवेकानंद को बहुत प्रभावित किया। उन्होंने काली पर एक भावमय कविता भी लिखी। काली को अपनाना परम तत्व को संपूर्ण रूप से अपनाना है और इसीलिए नरेन के काली को अपनाने पर श्रीरामकृष्ण इतने प्रसन्न हुए थे।

-स्वामी नरसिंहानंद